बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय तीन

निर्देशात्मक दृष्टिकोण : पवित्रशास्त्र की विशेषताएं

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. दैवीय लेखक (4:00) 4

A. पवित्रशास्त्र की सामर्थ (4:57) 4

1. उदाहरण (6:02) 5

2. आशय (14:40) 7

B. पवित्रशास्त्र का अधिकार (18:04) 8

1. अधिकार का दावा (19:10) 8

2. आशय (28:31) 10

III. मानवीय श्रोता (34:50) 12

A. पवित्रशास्त्र की स्पष्टता (35:54) 12

1. प्रकृति (36:44) 13

2. आशय (41:25) 14

B. पवित्रशास्त्र की आवश्यकता (43:11) 15

1. उद्धार (43:51) 15

2. विश्वासयोग्य जीवन (48:01) 16

3. आशय (50:10) 17

C. पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता (54:28) 17

1. उद्देश्य (55:25) 18

2. भ्रांतियां (1:04:38) 19

3. चुप्पी (1:07:48) 20

IV. उपसंहार (1:14:26) 21

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 22

उपयोग के प्रश्न 26

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

नैतिक प्रश्न चाहे जो भी क्यों न हो, हमारे पास सदैव कम से कम एक ऐसा दस्तावेज है जिससे परामर्श लेना हमारे लिए जरूरी है, वह है बाइबल।

परमेश्वर का वचन हमारा आधिकारिक प्रकट स्तर है। यह त्रुटिरहित रूप में परमेश्वर के चरित्र के बारे में हमें सिखाता है।

II. दैवीय लेखक (4:00)

बाइबल परमेश्वर के लोगों के लिए उसका वचन है।

A. पवित्रशास्त्र की सामर्थ (4:57)

बाइबल हमें केवल यह नहीं बताती कि हमें क्या करना है; यह हमें ऐसे रूपों में इस बात पर विश्वास करने और जीने में सामर्थ देती है जो परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उसकी आशीषों की ओर अगुवाई करते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. उदाहरण (6:02)

परमेश्वर का वचन तब भी सामर्थी होता है जब यह पवित्रशास्त्र का रूप नहीं लेता।

a. सृष्टि पर

परमेश्वर का वचन सृष्टि के ऊपर सामर्थी है।

परमेश्वर की घोषणाएं उसकी सामर्थ को प्रेषित करती हैं। परमेश्वर के वचन वह माध्यम है जिनका इस्तेमाल परमेश्वर अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए करता है

b. भविष्यवाणिय वचन

परमेश्वर के वचन में बहुत सामर्थ होती है जब यह प्रेरणा-प्राप्त भविष्यवक्ताओं के मुख से आते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

c. अप्रेरित प्रचार

परमेश्वर सुसमाचार के प्रचार के द्वारा कार्य करता है चाहे प्रचारक त्रुटिरहित रूप में प्रेरणा-प्राप्त नहीं होते।

परमेश्वर लोगों को विश्वास में लाने के लिए प्रचार का इस्तेमाल करता है।

d. पवित्रशास्त्र या लिखित वचन

बाइबल को पढ़ने में किसी मृतक को जीवित होते हुए देखने से भी अधिक सामर्थ होती है।

जिस प्रकार प्रचारित वचन में परमेश्वर की निश्चित सामर्थ होती है, वैसे ही बाइबल में भी होती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. आशय (14:40)

परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है।

परमेश्वर का वचन हमारे हृदयों को जांचता है। यह हमारे आंतरिक विचारों और लक्ष्यों को भेदने और परखने के योग्य है।

पवित्रशास्त्र में समर्थ है कि वह हमें हर एक भले काम के लिये तैयार करे।

परमेश्वर के वचन को निरंतर सीखना और उस पर मनन करना हमें परमेश्वर की उस सामर्थ के संपर्क में लाता है जो सदैव उसके उद्देश्यों को पूरा करेगी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. पवित्रशास्त्र का अधिकार (18:04)

क्योंकि बाइबल परमेश्वर से प्रेरणा-प्राप्त है, इसलिए इसमें परमेश्वर का अधिकार पाया जाता है।

1. अधिकार का दावा (19:10)

a. ऐतिहासिक उदाहरण

बाइबल में निहित आरंभिक इतिहास में परमेश्वर ने मानवजाति से प्रत्यक्ष रूप में बात की, और उसकी वाणी में अधिकार था।

मूसा के दिनों में परमेश्वर ने अपने मौखिक वचन को लिखित में दिया।

परमेश्वर का मौखिक वचन उसके लिखित वचन का आधार है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर का लिखित वचन उसका आधिकारिक वाचायी दस्तावेज है जिसकी आज्ञा मानने की जिम्मेदारी उसके लोगों पर है।

यीशु ने अपने कार्यों को सही ठहराने और स्पष्ट करने के लिए पवित्रशास्त्र का प्रयोग किया।

पौलुस ने दर्शाया कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर का आधिकारिक वचन है जो नए नियम के विश्वासियों को एक साथ बांध कर रखता है।

b. स्पष्ट कथन

बाइबल स्पष्ट कथनों के माध्यम से अपने अधिकार को भी प्रमाणित करती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

क्योंकि भविष्यवाणियां परमेश्वर के द्वारा प्रेरणा-प्राप्त और आधिकारिक थीं, वे ऐसे नैतिक स्तर की रचना करती हैं जिसकी ओर हमें “ध्यान देना” जरूरी है।

पवित्रशास्त्र का अविरल अधिकार उसके अधिकार पर आधारित है जिसने आज्ञा दी, अर्थात् परमेश्वर के।

नए नियम में ऐसे दस्तावेज पाए जाते हैं जिन्हें या तो प्रेरितों ने लिखा या प्रमाणित किया, इसलिए इसमें प्रेरितों का अधिकार पाया जाता है, जो कि स्वयं मसीह का अधिकार है।

2. आशय (28:31)

क्योंकि पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का अधिकार पाया जाता है, इसलिए हमारी यह नैतिक जिम्मेदारी है कि हमारी सारी इच्छाएं, कार्य, विचार, और भावनाएं इसके सदृश्य बनें।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

a. चौड़ाई

परमेश्वर के लोगों को बाबइलीय निर्देशों का पालन करना चाहिए। मसीह के अनुयायियों को न तो उसका पालन करना चाहिए जो हम पसंद करते हैं और न ही उसे नजरअंदाज करना चाहिए जो हम पसंद नहीं करते।

हम सब अनजाने में कुछ बातों को ही चुनने के जाल में फंस जाते हैं। हमें निरंतर उन आज्ञाओं को याद करना चाहिए जिन्हें हमने नजरअंदाज कर दिया है या भुला दिया है।

b. गहराई

पुराने और नए नियम में बाइबल पवित्रशास्त्र के प्रति आज्ञाकारिता को परमेश्वर के लिए प्रेम के साथ जोड़ती है।

जो नैतिक मांगें परमेश्वर हम पर रखता है वे हमारे प्रति उसके प्रेम पर आधारित हैं और उसके प्रति हमारे प्रेम में पूरी होनी हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब हम अपने हृदय से पवित्रशास्त्र को ग्रहण कर लेते हैं तभी हम परमेश्वर के वचन के अधिकार के प्रति सही रूप में समर्पित हो सकते हैं।

III. मानवीय श्रोता (34:50)

परमेश्वर अपनी इच्छा और अपने चरित्र के विषय में अपने लोगों को स्पष्ट प्रकाशन देना चाहता था ताकि वे और बेहतर रूप में उसके सदृश्य बन सकें।

A. पवित्रशास्त्र की स्पष्टता (35:54)

जब हम यह कहते हैं कि पवित्रशास्त्र "स्पष्ट" है, तो हमारा अर्थ यह नहीं है कि बाइबल की सब बातें समझने के लिए आसान हैं।

बाइबल धुंधली' नहीं है। यह ऐसे गुप्त अर्थों से भरी हुई नहीं है जिसे केवल रहस्मयी माध्यमों से द्वारा ही जाना जाता हो।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

बाइबल की स्पष्टता को कभी-कभी “सुबोधता” भी कहा जाता है।

1. प्रकृति (36:44)

पवित्रशास्त्र सुसमाचार के बारे में इतनी स्पष्टता से बात करता है कि मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी इस बात को समझ ले कि उद्धार मसीह में पश्चाताप और विश्वास से आता है।

पवित्रशास्त्र अपनी कुछ शिक्षाओं के विषय में सरल नहीं है।

किया। परमेश्वर हमसे कुछ रहस्य रखता है। वह हमें वे सब बातें नहीं बताता जो वह जानता है, न ही वह हमें उन सब बातों को बताता है जो हम जानना चाहते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने जो हमें पवित्रशास्त्र में बताया है वह रहस्य नहीं है। पवित्रशास्त्र "प्रकट बातों" की श्रेणी में आता है।

2. आशय (41:25)

"साधारण माध्यमों के सही प्रयोग" (पढ़ने और अध्ययन करने) के द्वारा हम हमारे जीवन के सब क्षेत्रों में परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हैं।

संपूर्ण पवित्रशास्त्र प्रयोग किए जाने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

सब लोगों के पास बाइबल को समझने की समान योग्यता नहीं होती।

यदि हम पर्याप्त रूप से स्वयं को इसमें लगाते हैं तो हम सब नैतिकता के उसके स्तर के सदृश्य बनने के लिए पर्याप्त रूप से परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. पवित्रशास्त्र की आवश्यकता (43:11)

जब हम पवित्रशास्त्र की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं, तो मन में यह बात है कि लोगों को बाइबल की जरूरत है, विशेषकर नैतिक निर्णय लेने के लिए।

1. उद्धार (43:51)

पवित्रशास्त्र सामान्यतः उद्धार का मार्ग पाने हेतु लोगों के लिए आवश्यक है।

इस आम सिद्धांत का एक मात्र अपवाद जो धर्मविज्ञानी विशेषकर पहचानते हैं वह है ऐसे विषय जिसमें बच्चे या अन्य मानसिक रूप से अक्षम लोग सम्मिलित होते हैं।

मनुष्य सामान्यतः या तो स्वयं बाइबल पढ़ने के द्वारा प्रकार या बाइबल पर आधारित प्रचार के द्वारा सुसमाचार के ज्ञान को प्राप्त करते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र परमेश्वर से प्रेरणा-प्राप्त है, त्रुटिरहित है और हर विषय में पूरी तरह से आधिकारिक है। प्रचार ऐसा नहीं है।

पवित्रशास्त्र सुसमाचार के अभिलेख और सुसमाचार के प्रचार के आधार और मानक के रूप में आवश्यक है।

2. विश्वासयोग्य जीवन (48:01)

जहां सामान्य और अस्तित्व प्रकाशन त्रुटिरहित और आधिकारिक हैं, वहीं वे व्याख्या करने के रूप में पवित्रशास्त्र से कठिन है।

पवित्रशास्त्र के माध्यम से ही पवित्र आत्मा स्पष्ट रूप से बात करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. आशय (50:10)

पवित्रशास्त्र नैतिक व्यवहार की हमारी योग्यता के लिए आवश्यक है।

पवित्रशास्त्र में ऐसी जानकारी है जो सामान्य और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन में नहीं होती।

अनेक परिस्थितियों में सामान्य और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशन इतने स्पष्ट नहीं होते कि वे हमें कार्य का एक सही मार्ग दिखाएं। पवित्रशास्त्र पर्याप्त विवरण के साथ परमेश्वर की इच्छा को प्रकट करता है कि वह हमें वह सिखाए जो सही है।

C. पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता (54:28)

पवित्रशास्त्र उन उद्देश्यों को पूरा करने के योग्य है जिसके लिए इसे लिखा गया था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. उद्देश्य (55:25)

पवित्रशास्त्र के विविध उद्देश्य हैं।

बाइबल को पढ़ने के द्वारा हम उन बातों को सीख सकते हैं जो बातें हमारे उद्धार के लिए हमें जाननी जरुरी हैं।

यदि हम सारी बाइबल को सही रूप में समझ लेते हैं और लोगों और परिस्थिति के बारे में पर्याप्त समझ रखते हैं तो हम किसी भी नैतिक विषय के बारे में सही निर्णय लेने के लिए पर्याप्त रूप से परमेश्वर के स्तरों को जान पाएंगे।

पवित्रशास्त्र ऐसे सिद्धान्तों को रखता है जिन्हें बाइबल में उल्लिखित विषयों के बाहर भी लागू कर सकते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मनुष्यों की नैतिक विधियां तब तक ही वैध और माननेयोग्य होती हैं जब वे बाइबलीय मानकों के अनुरूप हों। परन्तु जब मानवीय मानक बाइबलीय मानकों का विरोध करते हैं, तो एक मसीही को उन्हें ठुकरा देना चाहिए।

2. भ्रांतियां (1:04:38)

a. बढ़ा-चढ़ा कर दर्शाना

सामान्यतः, वे जो पवित्रशास्त्र की पर्याप्तता को बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं उनमें बाइबल के प्रति मजबूत समर्पण पाया जाता है। परन्तु उनमें प्रायः सामान्य और अस्तित्व-संबंधी प्रकाशनों के प्रति समर्पण का अभाव पाया जाता है।

b. कम आंकना

यह भ्रांति सामान्यतः इस बात पर बल देती है कि बाइबल जीवन के कुछ सीमित क्षेत्रों में ही हमारी अगुवाई करने में पर्याप्त है

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. चुप्पी (1:07:48)

मसीही प्रायः सिखाते हैं कि जीवन के कुछ विषय नैतिक रूप में "उदासीन" है क्योंकि पवित्रशास्त्र हमें इन विषयों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं देता है।

आदियाफोरा : उदासीन बातें (अपने आप में न तो सही होती और न ही गलत)

परमेश्वर कुछ अच्छे विकल्पों को अन्य अच्छे विकल्पों की अपेक्षा अधिक आशीष देता है।

कुछ धर्मविज्ञानी ऐसे विषयों को शामिल करने के लिए आदियाफोरा श्रेणी का प्रयोग करते हैं जहां हम यह निर्धारित नहीं कर पाते कि कौनसे विकल्प अच्छे हैं और कौनसे बुरे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हम प्रायः ऐसा महसूस करते हैं जैसे कि हम नहीं जान सकते कि कौनसे विकल्प, विचार, कार्य या स्वभाव अच्छे हैं और कौनसे बुरे।

- इसलिए नहीं कि परमेश्वर का वचन अपर्याप्त है
- न ही इसलिए कि बाइबल एक उदासीन रवैया अपनाती है
- बल्कि इसलिए कि हम इस बात को पहचानने या समझने में असफल हो जाते हैं कि उस सत्य को कैसे लागू करें जो बाइबल ने हमारे सामने रखा है

IV. उपसंहार (1:14:26)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पवित्रशास्त्र किस प्रकार लोगों को विश्वास करने और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले जीवन को जीने की सामर्थ देता है?

2. पवित्रशास्त्र अपने अधिकार के बारे में क्या कहता है? इन दावों के कुछ महत्वपूर्ण आशयों का वर्णन कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. जब नैतिक निर्णय लेने की बात आती है, तो पवित्रशास्त्र की विशेषताओं को समझने से हम कैसे लाभ प्राप्त कर सकते हैं?

4. जब हम कहते हैं कि पवित्रशास्त्र स्पष्ट है तो इसका क्या अर्थ है? इस सत्य से कौनसे आशय निकलते हैं?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. नैतिक निर्णय लेने में पवित्रशास्त्र क्यों आवश्यक है?

6. नैतिक निर्णय लेने में पवित्रशास्त्र कैसे पर्याप्त है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. पवित्रशास्त्र हमें किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा और चरित्र के सदृश्य बनने में सहायता करता है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. जो सही और अच्छा है उसे करने में किस प्रकार परमेश्वर के वचन ने आपको सामर्थ दी है?

2. रोमियों 1:15-16 पढ़ें। पौलुस ने तब भी सुसमाचार का प्रचार क्यों किया जबकि कुछ लोगों की नजरों में यह मूर्खता ही था? हमारे आज के जीवनों के इसके क्या आशय हो सकते हैं?

3. किन रूपों में आप परमेश्वर के वचन की चौड़ाई को मानने के लिए चुनौती प्राप्त करते हैं? किन रूपों में आपने पवित्रशास्त्र की नैतिक शिक्षा को नजरअंदाज करने का प्रयास किया है?

4. किस प्रकार पवित्रशास्त्र के प्रति हमारी आज्ञाकारिता परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम से जुड़ी है? किस प्रकार परमेश्वर के लिए प्रेम वाले हृदय से निकली हुई आज्ञाकारिता अन्य प्रेरणाओं से निकली हुई आज्ञाकारिता से भिन्न है?

5. परमेश्वर हम पर पूरा ज्ञान प्रकट नहीं करता, केवल थोड़ा सा ही करता है। इससे आप कैसा अनुभव करते हैं?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org